रात्रि क्लास 21-8,68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

तुम बच्चों से खुश-खैरीयत क्यापूछेंगे जब कि बेहद का बाप मिला है। उन से बाप क्या खुश-खैरीयत पूछे। बच्चों को तो मालूम है आधा कल्प से भक्ति की है। अभी बाप क्या पूछेंगे। सिर्फ कहेंगे पुरुषार्थ तो ठीक करते हो ना। सहज रास्ता मिला है न याद का जिससे तुम पावन बन जाओ। फिर वहां तो खुशी ही खुशी है। यहां वहां से भी जास्ती खुशी है क्योंकि बाप हमारा रक्षक है। सभी दुःखों से दूर करने वाला है। समझो शरीर भी छोड़ते हैं तो समझा जाता है सुख ही सुख है भविष्य में। भविष्य 21 जन्मों के लिए सुख पाने का पुरुषार्थ करना होता है। बिमारी आदि होती है फिर भी खातरी तो है ना भविष्य की। यह है बेहद की खुशी। बाप आये हैं बस बाप को ही याद करते रहें। मूल बात है बाप को याद करने की। नालेज तो रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त की मिली है। जरूर नालेज में रमण करते होंगे। जिनको खुशी का पारा चढ़ रहा है उन से क्या पूछें। माया वार करती है? हराती है? यह तो ब्रह्माचारी बैठती ही है चढ़ने उतरने की। हमको कोई से पूछने का नहीं है अपनी लाइफ के बारे में। बाप कहेंगे बच्चों को रास्ता मिला है। कोई लिखते हैं बाबा मदद करो कृपा करो तो सतोप्रधान होने में फतहमन्द हो जावें। मदद की तो दरकार ही नहीं। पढ़ाई में मदद करते हैं क्या। अपने ही पुरुषार्थ से पास होना है। तुम बच्चे भी पुरुषार्थ करते रहते हो। समझा जाता है यह सर्विस भी करते रहते हैं। भल स्थूल सर्विस में है तो भी रूहानी सर्विस कर सकते हैं। छुट्टी देवें तो सर्विस कर सकते हैं। जैसे यहां पहरे वाला है। सर्विस तो कर सकते हैं ना। भल दुनिया वाले जानते हैं एक ब्रह्मचारी था। मिलते करते थे। अभी तो मिलता ही नहीं हैं। पहचान वाले आते तो बहुत ही हैं ना। यह है वन्डरफुल पुरुषोत्तम संगम युग। बहुत ही वन्डरफुल बातें होती हैं। आगे चलकर और ही बहुत वन्डरफुल बातें होंगी। जब सुनेंगे आफतें आती हैं मौत आती है तो तेज़ी से पुरुषार्थ करेंगे। भल समझते हैं अजन देरी है फिर भी पैगाम पहुंचाने कोशिश तो चलती रहती है ना। कल्प2 सभी को बाप का परिचय देना पड़ता है। कुछ भी समझते नहीं हैं। किसको जाकर समझाना है भी बहुत सहज। इस समय बाप जो वरसा देते हैं वह फिर वहां पर 21 जन्म लिए मिलता है। कल्प पहले जिनकी दिमाग़ में बैठा है वह औरों की दिमाग़ में बैठाने की सर्विस करते रहते हैं। बाप भी पूछते हैं। देहली में प्रदर्शनी हो रही है चांदी चौक तरफ। वहां बड़े2 अच्छे2 व्यापारी रहते हैं। बाप को तो ख्याल रहता है वहां जो अच्छे2 बच्चे हैं जाकर सर्विस करें। तो बाप की पहचान बाप को याद करें। भक्ति छोड़ दें। बाप मिल गया तो फिर भक्ति क्या करेंगे। बेहद के बाप का बने तो बाकी फिर क्या। भक्ति करने वालों से तुम पूछ सकते हो इन्हों ने क्या कर्म किया है जो यह पद पाया। तुमको भी बाप कर्म अकर्म विकर्म की बातें सुनाते हैं। अभी तुम पूछ सकते हो। कोई भी बड़ा आदमी हो। प्रदर्शनी में समझाया जाता है हम यह चित्र क्यों दिखाते हैं तुम भी ऐसे पद प्राप्त करो। बाप यह स्थापना कर रहे हैं। बाप पूछते हैं कौन2 सर्विस करने जाते हैं। बाप को समाचार दो। ठंढाई न आनी चाहिए। हरेक बात का वज़न करना होता है। बाबा पूछते हैं क्या कर रहे हो। सेन्टर्स में इतनी सर्विस नहीं। म्युज़ियम को सजाते हैं। वह इतनी सर्विस नहीं। पहले तो सर्विस को देखना चाहिए। अटेन्शन जाना चाहिए। हम जाकर बड़े2 आदमियों को जगावें। बड़े2 जग जावेंगे तो औरों को जगावेंगे। जगाने में कितनी मेहनत लगती है। बाप तो पूछेंगे ना समाचार दो कौन2 सर्विस में विज़ी रहती हैं। एक को समझ में आ गया तो वह फिर औरों को समझावेंगे। बहुत टाईम लगता है याद की यात्रा में। पावन बनना है। क्रिमनल आई आगे बढ़ने नहीं देती हैं। गिरा देती है। देखा जाता है यह वेश्यालय बड़ा भारी है। सभी विषय वैतरणी नदी में गोता खाते रहते हैं। गरुड़ पुराण में भी मनुष्यों को सुधारने लिए दिखाया है। सबसे बुरा काम है विकार में जाना। कोई पूछे बोलो यह ड्रामा बना हुआ है आधा कल्प पवित्र रहना आधा कल्प अपवित्र। अभी पवित्र दुनिया में चलना है। भक्ति के अज्ञान में सोये हुये हैं। तो बाप को पुरुषार्थ तो

रहता है ना। गफ्लत तो नहीं करते हैं। बाबा थोड़ा दूर है। नज़दीक हो तो सभी से पूछते रहे। इनकी सर्विस करो खातरी करो। ईश्वर अविनाशी ज्ञान रत्नों की खातरी करते हैं। समझाना है। तुम कलियुगी पतित हो या सतयुगी पावन हो? परन्तु है जैसे कि बन्दर। समझता नहीं हैं। पूछते भी नहीं हैं। जैसे कि तवाई। वन्डर लगता है। तुम बच्चों की बुधि में अभी कलियुग का अन्त है। सतयुग आना है जरूर। तो जिनको बाप मिला, शिव बाबा के बच्चे बने उन से हम खुश खैरियत क्या पूछे। विश्व की बादशाही मिलती है तो जरूर खुशी ही होगा। नाराज़ थोड़े ही होगा। कोई पूछे खुशी-राज़ी हो। हम तो सतयुग से भी यहां बहुत खुशी में हैं। हीरे जैसा बनते हैं। बाप बाप मिला तो खुशी होती है। हम 21 जन्म कब दुःख नहीं देखेंगे। तुम समझते हो हम आत्माएं यहां बेहद का पार्ट बजाने आती हैं। इतना ज्ञान सुना है सर्विस करते रहते हैं। फिर भी बाप के पास सम्मुख आने दिल होती है ना। बाबा से सुनकर आवें। कोई भी नये आते हैं तो पहले दो बाप की बात समझानी है। एक हद का बाप दूसरा है बेहद का बाप। जिससे बेहद की बादशाही स्वर्ग की मिलती है। बाप के बच्चों को तो जरूर वरसा मिलना चाहिए। तुम भूल गये हो। तुम देवतायें थे। फिर पुनर्जन्म लेते2 पतित बने हो। ऐसे2 समझाना होता है। पहले2 भक्ति की होगी तो बुधि में बैठेगा। नहीं तो फिर थोड़ा समझाकर छोड़ देना होता है। थोड़ा भी समझे तो प्रजा बन जाये। समय भी नाजुक होता जाता है। लड़ाई-झगड़े दिन प्रति दिन बृधि को पाते रहते हैं। बारूद ढेर बनता रहेगा। लड़ाईयां लगती रहेंगी। सभी को हथियार आदि सपलाई होती रहेंगी। जहां-तहां लड़ाई-झगड़े की ही बात है। तुम बच्चे तो जानते हो यह दुनिया अनेकानेक बार विनाश हुई है। तुम फरिश्ते बन जावेंगे यहां। ऐसे नहीं सूक्ष्मवतन में जाकर बैठेंगे। वह तो एमआबजेक्ट है। फरिश्ते यहां बनेंगे। दुनिया का विनाश कैसे होता है बड़ा ही खौफनाक है। तुम समझते हो सतयुग में एक राज्य था। सो तो फिर होना ही है। पद भी ऊंच पाना है। बाप कहते हैं मुझे याद करते रहो। आप समान बनाते रहो। पुरुषार्थ से समझा जाता है कौन2 क्या पद पावेंगे। कमजोर होंगे तो गैलफ भी कर सकते हैं। अच्छा मन्मनाभव। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट।

रात्रि क्लास :-22-8-68 :- (शील बहन ने बम्बई का समाचार सुनाया) बम्बई में भाटियां महाजन वाले कालबा देवी में है उन्हों का हाल प्रदर्शनी के लिए मिला है। परन्तु उन्होंने कहा है कि श्रीकृष्ण के लिए कुछ नहीं कहना कि भगवान नहीं है, 84 जन्म लेता है आदि2, तो भला क्या बोलेंगे। अभी बम्बई वालों का विचार है कि बड़ा2 कृष्ण बनाकर दरवाजे पर लगायेंगे। दो गोला देंगे। लाईट से बहुत ही सजायेंगे। तो बोलना पड़ेगा कि स्वर्ग का स्थापन करने वाला है। युक्ति से कहना पड़ेगा कि श्रीकृष्ण कहता है कि काम विकार महा शत्रु है तो नर्क को लात लगाई है। (वह कहते हैं श्रीकृष्ण नर्क में कैसे आयेगा) उनको बोलो नर्क का विनाश तो सामने देख रहे हो ना। इसलिए अब तुम भी प्रण करो कि पवित्र बनेंगे। खड़ी बांधो। तुम भी लात मारो अपवित्र दुनिया को। तो खुशी होगी। फिर बताना चाहिए कि 84 जन्म कौन लेते हैं। तो पहले2 है ल०ना० का राज्य। अब 84 जन्म कहां से शुरू करें। तो श्रीकृष्ण का नाम छोड़ श्रील०ना० का नाम लो। बच्चों की मूल बात है कि पवित्र बनो। बहुत जन्मों के अन्त, तो बहुत जन्म किसके। ल०ना० के। क्योंकि उनको तो पता ही नहीं कि श्रीकृष्ण सो ना० है। बाकी इतना तो कहेंगे भगवानुवाच मनमनाभव। मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कटे। अब पतित पावन तो श्रीकृष्ण नहीं। वह तो परमात्मा है। तब कहते हैं कि बाप को याद करो तो स्वर्ग के मालिक बनेंगे। तो श्रीकृष्ण भी जरूर याद से पवित्र बना होगा। ऐसे2 युक्ति निकालनी पड़े जो वह समझे अच्छा भला ऊंच ते ऊंचा भगवान कौन। श्रीकृष्ण को तो देहधारी देवता कहेंगे। शिव देहधारी नहीं। ऊंच ते ऊंच उनको कहेंगे। ना० भी ऊंचा है। ब्रह्मा विष्णु शंकर देवतायनमः कहते हैं ना। श्रीकृष्ण तो देवता है ना। यह मनुष्य ठहरा दैवीगुणों वाला। अब भगवान किसको कहें। ऊंच ते ऊंच तो भगवान है ना। यह पूछना पड़े। ब्रह्मा देवतायनमः... तुम किसको मानते हो? श्रीकृष्ण का तो इन्हों में नाम ही नहीं आता है। इन ब्रह्मा विष्णु शंकर के ऊपर है फिर भगवान शिव। शिव

शिव कहेंगे। श्रीकृष्ण विश्व का मालिक था। महिमा करेंगे तो पिछाड़ी में खुश हो जायेंगे। तुम बच्चों को समझाना है भगवानुवाच मामेकं याद करो। पतित पावन शिव ही है जो सर्व का सद्गति दाता है। बाकी 84 जन्मों में श्रीकृष्ण का नाम न लेकर ल०ना० का ले लो। परन्तु तुम्हारे श्रीकृष्ण के चित्र में तो 84 जन्म छपे हुये हैं। वह फिर कोई को दे न सकेंगे। शिव का तो दे सकते हो। यह युक्ति पहले से ही रचनी पड़ेगी। आते2 समझते रहेंगे। महिमा तो पूरी लिखनी है। रावण के राज्य के बाद है ल०ना०। लिखना है कलियुग में दुःख अपार है; सतयुग में सुख अपार है। अब वह कैसे नर से ना० बने, तो तमो० से सतो० बनना पड़े। युक्ति से समझाना है। फिर आते2 सुनते2 खुश होते जावेंगे। अब बताओ कौन पतित पावन बाप को याद करते हैं। तुम्हारी मुख्य बात है कि काम महाशत्रु है। इसलिए खड़ी बांधो। पावन बनेंगे तब स्वर्ग में श्रीकृष्ण के राजधानी में आवेंगे। यह श्रीकृष्ण तो भिखारी नहीं। विश्व का मालिक बनना है तो बाप शिव को याद करो। तो श्रीकृष्ण पुरी में जावेंगे। अब तो श्रीकृष्ण पुरी है नहीं। बाप को वहां पुरी रचनी पड़ेगी। पहले तो करो समझाने वालों की कान्फ्रेन्स। समझाने लिए बड़ी युक्ति वाले रखनी पड़ेगी। श्रीकृष्ण को योगेश्वर भी कहते हैं। शिव बाबा ने उनको योग सिखाया है मनमनाभव। वह फिर कहते हैं श्रीकृष्ण के लिए। तुम कहेंगे शिव के लिए। बड़ी समझ की बात है। बड़ी युक्ति चाहिए। सो भी युक्ति चल सके ना। आखिर तो बात खुलेगी। (दूसरे मंदिर में भी तिलक न लगाये गये थे तो गड़बड़ हो गई।) ... पूछना चाहिए कि श्रीकृष्ण को गोरा और काला क्यों बनाते हो। कारण होगा। राम को भी काला ना० को भी काला क्यों बनाते हो शिव के लिंग को काला क्यों? हम हिसाब बतावें? काम चिता पर चढ़ने से सब काले हो जाते हैं। भक्ति बिल्कुल अलग, ज्ञान अलग है। भक्तों में ज्ञान नहीं हो सकता। ज्ञान, भक्ति, वैराग्य का भी अर्थ समझाना है। समझाओ कि तुम भी ब्राह्मण थे अब नहीं हो। ब्राह्मण बनो तो तभी ज्ञान मिले जो फिर देवता बनो। हम श्रीकृष्ण की ग्लानी कहां करते हैं। कितनी महिमा की है परन्तु बड़ा कौन। वरसा तो बाप से ही मिलेगा ना। बड़ा युक्ति से समझाना है। बाप किसको कहा जाता है। श्रीकृष्ण को तो फादर नहीं कह सकते। वरसा लौकिक और पारलौकिक फादर से ही मिल सकता है। ... कितनी प्रदर्शनी करते हो कोई विरला आता है। जब तक बाप को न पहचाना है तब तक श्रीकृष्ण की पूजा कितनी भी करे अपने देवीकुल में आ न सके। अमरलोक में तब जब बाप को पहचाने। यहां ~~xxx~~ दो बाप का भी समझाना है। वरसा तो क्रियटर बाप से ही मिलेगा। बाकी तो है रचना। जब ऐसे माया मारो तब काम चले। पहले तो सिखाना पड़ेगा। 84 जन्म वाली श्रीकृष्ण का चित्र तो दे न सकेंगे। (बहुत लोग तो लेते हैं) परन्तु इन्हों की तो शर्त है ना। पहले तुम कह सकते हो इन्हों में ज्ञान साई का भी नहीं है। अभी यह कैसे ज्ञान से विश्व के मालिक गोरे बने। फिर काम चिता पर चढ़ने से सांवरे बने है। यह युक्ति से समझाना चाहिए। तुम मेहनत करते हो फिर ड्रामा में जो होगा सो होगा। देखो क्या होता है। हो सकता है उड़ा देवे जैसे कलकते में किया। कुछ खराबी भी कर सकते हैं। सर्विसेबुल बच्चों को तो नशा चढ़ा रहता है। बाप का रिगार्ड है। बहुत बातें समझानी है। पुनर्जन्म भी समझाना पड़ेगा। देहधारी है। शंकर की नाग बलाएं भी समझाना पड़े। अच्छे एक्टर्स चाहिए। एक जगह हंगामा होने से फिर नाम बदनाम कर देते हैं। बाकी सर्विस के लिए तो यह मकान बहुत ही अच्छा है। देहधारी को पुनर्जन्म जरूर लेना पड़े। दैवी गुणवाले पूज्य से फिर पुजारी जरूर बनते हैं। यह भी तुमको समझाना पड़े। हम सो सो का अर्थ भी समझाना पड़े। सीढ़ी तो रखनी पड़े ब्राह्मण ... शूद्र कैसे नीचे उतरते हैं। आसुरी सम्प्रदाय विघ्न भी जरूर डालेंगे। उन्हों को भी हाथ में रखना पड़े। उनको समझाना चाहिए कृष्ण कहां है? वैकुण्ठ में था। अभी कहां है। सीढ़ी ~~xxx~~ सृष्टि तो नीचे गिरती ही आती है। यह भी कोई विरला ही समझेंगे। नहीं तो थोड़ी बात पर ही खिटपिट करेंगे। शंकराचार्य के लिए भी समझावेंगे कि खुद पुजारी अपनी पूजा कैसे कराते हैं। पतित हैं ~~xxx~~ तब तो गंगा स्नान करने जाते हैं। तुमको बहुत कुछ समझाना पड़े। जो ड्रामा में हुआ होगा वही होगा। यह भी बाप ने समझाया है भारत भाताओं के ऊपर अनेक प्रकार के दुःख हैं। जादूर जीवघात करती है। हम डूब मरती है। कितने ढेर दुःख है। पूरी लिस्ट है। सतयुग में यह नहीं। अभी बच्चों को बाप

वरसा दे रहे हैं। यह चित्र कोई देहधारी के बनाये हुये नहीं हैं। सर्विसएबुल बच्चों को यहां बैठने में मज़ा नहीं आवेगा। माताएं समझाती हैं तो कुछ असर पड़ता है। बाप तुम बच्चों को भी कहते हैं नाम हमेशा माताओं का ही लो। कहते हैं जब ज्ञानामृत पिलाया तो असुर भी आये ज्ञानामृत न पीया और ही जाकर हंगामा मचाया। यह भी शास्त्रों में है ना। यहां तो है शान्ति। कोई अशान्ति बनते हैं तो समझा जाता है क्रोध का भूत है। परन्तु समझते नहीं हैं। क्रोध को बच्चे माफिक गोद में बिठाये देते हैं। छोड़ती ही नहीं। अच्छा बाप को और वर्से के याद करो। दैवीगुण भी धारण करना है। देवता बनते हैं ना। अच्छा बच्चों को गुडनाईट।

रात्रिक्लास 19-8-68 :-मेहनत तो सभी बच्चे करते रहते हैं। अभी अनेक प्रकार के मनुष्य हैं। बरधा शहर में कहते हैं ब्रह्माकुमारियां तिलक नहीं देती है। चुड़ियां नहीं पहनती हैं। तो इसाई धर्म की हैं। अब बिगाड़ने वाले तो बहुत हैं ना। यह क्यों होता है क्योंकि समझते हैं ना कि पुरानी दुनिया का विनाश होने वाला है। तो जैसे कि तुम सभी के दुश्मन हो। तुम तो ज्ञान को समझ गये हो। बाप को बुलाया हुआ है कि पावन दुनिया की स्थापना करो और पतितदुनिया का विनाश करो। बाप आया है। अकेला तो बाप न करेगा। तुम बच्चे भी कहते हो हम अपने तन मन धन से अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। परन्तु तुम्हारे सिवाय कोई की समझ में नहीं आ सकता। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। तुम जानती हो अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। जो ब्राह्मण बनेंगे वही देवता बनेंगे। बाकी सभी खत्म हो जावेंगे। आत्मा अविनाशी रह जावेगी। फिर पुरुषार्थ अनु० जाकर वहां पद पावेंगे। तुम हो कितने साधारण। प्रजा० ब्रह्मा भी कितना साधारण है। ऐसा कोई की बुद्धि में बैठे और धारण हो वह तो बहुत की बुद्धि में नहीं है। बड़ी लाटरी है ना। इतनी बड़ी है जो बुद्धि को फागल बना देती है। बाप के पास तो सभी समाचार आते हैं ना। बाप हरेक की अवस्था को समझते हैं। कैसे2 हरेक सेन्टर की सर्विस चलती है। देहाभिमान का विघ्न तो बहुत ही पड़ता है। बाबा नाम बतावे तो एक्ं हो जावे। यह स्थापना का कार्य तो बड़ा ही नाजुक है। यह तो समझा जाता है यह नई बात नहीं है। परन्तु बहुत से विघ्न पड़ते हैं। दिलपसन्द बहुत थोड़े हैं। अब तुमको सतो० बनना है। ऐसा ल०ना० बनना है। प्रजा भी होंगी साहुकार भी होंगे। ऐसे समझाने में बड़ी मेहनत लगती है। देहाभिमान ऐसी है तो पागल कर देती है। कुछ न कुछ उल्टा काम करते ही रहते हैं। ऐसे लोग फिर समझते ही नहीं हैं कि देहाभिमान है। राजधानी स्थापन होती है गुप्त। यहां हठ करने सेने आदि की भी बात नहीं। वन्डर है सो भी वन्डर आफ द वर्ल्ड=कब=ब का बादशाह बनना है ऐसी खुशी से योगबल में रहकर सर्विस में टाईम लगाना है। अब तो कहते हैं रहेंगे ड्रामा। ड्रामा को भावी प्रबल है। कोई कहते हैं ईश्वर की भावी। तुम बच्चे कहते हो ड्रामा को भावी प्रबल है। देहीअभिमानी बनने की रौनक बहुत थोड़ों में है। तभी बाबा कहते हैं कि माया बड़ी दुस्तर है। माया को ताकत कम न समझना। बच्चों को माया से बड़ा ही खबरदार रहना है। नहीं तो कुछ न कुछ करा देगी। एकएक को कांटों को फूल बनाना इसमें ही मेहनत लगती है। बाप के साथ सर्विस में बहुत मददगार बनना है। बाप भी पावन बनाने लिए सर्वेन्ट बन आया है। हम भी भी सर्वेन्ट हैं पावन बनाने के लिए। ज्ञान में तो बहुत होशियार है। परन्तु साथ में योग भी चाहिए। ज्ञान का डांस तो बहुत करते हैं। ऐसा नहीं कि ज्ञान का डांस बहुत अच्छा करते हैं इसलिए दिल पर चढ़े हुये हैं नहीं। इसमें योग भी बहुत अच्छा चाहिए। ज्ञान का डांस तो बहुत करते हैं। ज्ञान तो कोई को भी सिखावें तो बहुत होशियार हो जावेंगे। यह तो पढ़ाई है। पढ़ाई कोई भी पढ़ा सकता है। परन्तु योग के सिवाय इतना काम नहीं कर सकेंगे। बहुत पल्टा खाना है। इसमें बड़ी सेन्सीबुलटी चाहिए। सर्विस पर पूरा ध्यान देना है। यहां रूहानी सर्विस अर्थात प्रदर्शनी की सर्विस पर ध्यान देना चाहिए। बहुतों को आप समान बनाना है। ऐसे नहीं कि अपनी म्युजियम को भी समझाना है। हम जो हैं वह काम तो रात को भी जाकर कर सकते हो। दिन में तो सर्विस करनी है। दधिची ऋषि मिसल इस सर्विस में हड्डियां लगानी है। नहीं तो बाबा कहेंगे सर्विस का शौक नहीं है। ज्ञान का चिन्तन करने वाले तो सर्विस में लगे रहो। म्युजियम को सजाने में इतना कल्याण नहीं। जितना एक दो घंटा सर्विस करने में है। अच्छा गुडनाईट।